अक्टूबर 2022 वर्ष 1, अंक 2

दयालबाग़ एजूकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड टु बी यूनिवर्सिटी)

डी.ई.आई. मासिक समाचार

"एक निश्चित अर्थ हैं जिसमें मैं कहूंगा कि संपूर्ण जगत या रचना (universe) का एक उद्देश्य है - यह किसी तरह भी संयोग से नहीं है। कुछ लोग सरलता से मानते हैं कि संपूर्ण जगत बस है और यह साथ-साथ चलता है- यह थोड़ा सा इस प्रकार है जैसे कि यह सिर्फ गणना करता है, और हम इस चीज़ में खुद को संयोगवश पाते हैं। मुझे नहीं लगता कि यह संपूर्ण जगत को देखने का एक बहुत ही उपयोगी या सहायक तरीका है, मुझे लगता है कि इसके अस्तित्व के बारे में कुछ और गहरा पहलू है, जिसके बारे में हमें इस समय बहुत कम जानकारी है।"

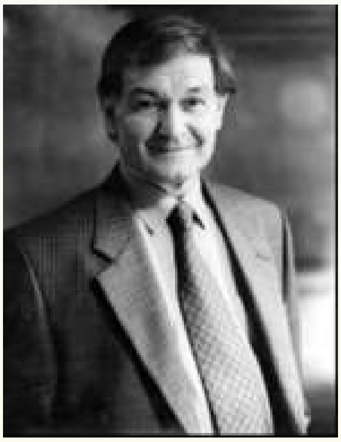

– रॉजर पैनरोज़
नोबेल पुरस्कार विजेता

खंड

खंड क : डी.ई.आई. 3

खंड ख : डी.ईआई. ऑनलाइन और दूरस्थ शिक्षा 6

खंड ग : डी.ई.आई. के पूर्व छात्र (AADEIs & AAFDEI) 9

दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट
(डीम्ड टु बी यूनिवर्सिटी)
दयालबाग़, आगरा– 282005

विषय–सूची

खंड क: डी.ई.आई.

1. डी.ई.आई. और एम एस यू (यू.एस.ए) नवीनीकरण और व्यापक सहकारिता 3
2. नाबार्ड की टीम ने किया डी.ई.आई. का दौरा 3
3. ग्रामीण युवाओं और किसानों के लिए किसान उत्पादक संगठन (एफ पी ओ)................ 4
4. संस्थान को पेटेंट से सम्मानित किया गया 4
5. संकाय समाचार 4
6. स्कूल समाचार 5
7. रक्षा बलों में महिलाओं के प्रवेश के लिए प्रशिक्षण 6

खंड ख : डी.ई.आई. ऑनलाइन और दूरस्थ शिक्षा

8. कोऑर्डिनेटर की डेस्क से 6
9. दूरियों को कम करना (Bridging the Gaps) 7

खंड ग: डी.ई.आई. के पूर्व छात्र (**AADEIs & AAFDEI**)

10. संपादक की डेस्क से 9
11. ईश्वर के पितृत्व और मनुष्य के भाईचारे की मशाल 9
12. मार्गदर्शन.. 10
13. पूर्व छात्र (Alumni) बाइट्स 10
14. दयालबाग: बदलते नज़रिये 11

प्रकाशन समितियाँ / सम्पादक मंडल 12

खण्ड 'क' : डी.ई.आई.

दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट और मिशिगन स्टेट यूनिवर्सिटी, यू.एस.ए. नवीनीकरण और व्यापक सहकारिता

दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (डी.ई.आई.) मिशिगन स्टेट यूनिवर्सिटी (एम.एस.यू.) के साथ 1960 से जब परम सम्माननीय प्रो. प्रेमसरन सतसंगी साहब, वर्तमान में अध्यक्ष, शिक्षा सलाहकार समिति, दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट, स्नातक के रूप में एम.एस.यू. में सम्मिलित हुए तभी से ऐतिहासिक संबंध साझा करता है। प्रतिष्ठित यूएसएड टी सी एम छात्रवृत्ति (Scholarship) को स्वीकार करने के बाद छात्र और सिस्टम साइंस ऐंड इंजीनियरिंग के दिग्गजों के साथ काम किया। उन्होंने एक वर्ष से भी कम समय में डिग्री की आवश्यकताओं को पूरा करने के बाद, उच्चतम शैक्षणिक उपलब्धियों के साथ इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग में मास्टर डिग्री के साथ स्नातक (Postgraduate) की उपाधि प्राप्त की।

डी.ई.आई नेएक समझौते के माध्यम से 2012 में मिशिगन स्टेट यूनिवर्सिटी के इंजीनियरिंग कॉलेज के साथ औपचारिक साझेदारी की। इस समझौते से यात्राओं, सहयोगी परियोजनाओं और संयुक्त प्रकाशनों का आदान–प्रदान हुआ। एम ओ यू को 2017 में शुरुआती पांच साल के कार्यकाल के बाद नवीनीकृत किया गया था और इसे कृषि और प्राकृतिक संसाधन कॉलेज और शिक्षा कॉलेज को शामिल करने के लिए भी विस्तारित किया गया था। जैसा कि दोनों विश्वविद्यालयों के बीच सहयोग के अच्छे आधार हैं, समझौते को सितंबर 2022 में फिर से नवीनीकृत किया गया है और अब विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, भारत (शैक्षणिक सहयोग) के तहत सहयोगी कार्यक्रमों के विकास के प्रावधानों के साथ भारतीय और विदेशी उच्च शैक्षणिक संस्थानों के मध्य ट्विनिंग, संयुक्त डिग्री और दोहरी डिग्री कार्यक्रम प्रदान करने के लिए विनियम, 2022 इन दोनों पक्षों में विश्वविद्यालय व्यापी है।

नाबार्ड की टीम ने किया डी.ई.आई. का दौरा

विभिन्न जिलों के 55 जिला विकास प्रबंधकों और श्री एस. के. डोरा, राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक (National Bank of Agriculture and Rural Development – नाबार्ड) के मुख्य महाप्रबंधक ने नाबार्ड और डी.ई.आई. के बीच सहयोग की संभावना का पता लगाने के लिए 22 सितंबर 2022 को डी.ई.आई का दौरा किया। टीम ने सोलर–एग्री फार्म, डी.ई.आई डेयरी कैंपस, डी.ई.आई. अनुपम उपवन, एचटीटीपी लैब और छात्रों द्वारा प्रदर्शित विभिन्न बी.वॉक तथा संस्थान की अन्य सुविधाओं के साथ कार्यक्रम का दौरा किया।

नाबार्ड ने रुचि दिखाई है और ग्रामीण विकास के लिए विभिन्न कार्यक्रमों पर डी.ई.आई के साथ सहयोग करने के लिए सहमत है.

प्रारंभिक चरण में, निम्नलिखित विकास कार्यक्रमों को शुरू करने की परिकल्पना की गई है–

1. कपड़ा क्षेत्र में हस्तशिल्प उत्पादों में कौशल विकास द्वारा आजीविका पहल।
2. बांस और लकड़ी में स्थिरता के लिए कौशल।
3. मिट्टी के बर्तनों और चीनी मिट्टी के पात्र निर्माण कौशल।

ग्रामीण युवाओं और किसानों के लिए किसान उत्पादक संगठन (फ़ा. प्रो. औ.)

1. दूध परीक्षण और दूध मिलावट परीक्षण (गौमटा) On-the-go Milk-adulteration Testing-assistance और (औ.मि.टे.) के लिए कम लागत वाले वाहन का उपयोग करके बेहतर आजीविका के लिए खाद्य और डेयरी–कौशल (फ़.ए.डे)।
2. आई.ओ.टी. प्रौद्योगिकी, ''ड्रोन'' और ''हाइड्रोपोनिक्स'' और ''एरोपोनिक्स'' का उपयोग कर एक कम लागत वाला पॉली हाउस।
3. अवशिष्ट प्रबंधन (खाद और कृषि अवशिष्ट)।
4. कम लागत वाली सौर्य ख़ेती।
5. ग्रामीण क्षेत्रों में प्रतिकृति के लिए उपयुक्त अन्य नवीन कम लागत वाले मॉडल।

डी.ई.आई परियोजना प्रस्तावों को पंजीकृत करने और जमा करने की प्रक्रिया में है।

संस्थान को पेटेंट से सम्मानित किया गया

दयालबाग़ एजुकेशनल इंस्टीट्यूट को 'इलेक्ट्रिक पावर ट्रांसमिशन लाइन्स के लिए फील्ड प्रोग्रामेबल गेट ऐरे (Array)–बेस्ड प्रोसेसिंग इंजन' के लिए एक पेटेंट प्रदान किया गया है। आविष्कारक हैं, प्रो. डी. भगवान दास, डॉ. वरुण माहेश्वरी और प्रो. ए.के. सक्सेना।

सारांशतः संस्थान के वरिष्ठ संकाय ने पावर ट्रांसमिशन सिस्टम के लिए बहु–कार्यात्मक डिजिटल प्रसारण के लिए एफ पी जीए पर आधारित एक बेहतर हार्डवेयर प्रोसेसिंग इंजन विकसित किया है, जो प्रसारण के कम्प्यूटेशनल समय को कम करने और प्रदर्शन में सुधार के लिए डेटा के संवेदन, प्रसंस्करण और संचार को समवर्ती रूप से निष्पादित कर सकता है।

संकाय समाचार

नवीनतम अपडेट के लिए, हमारी वेबसाइट पर जाएँ **edeiwww.education**

शिक्षा संकाय:

स्टाफ समाचार:

18 सितंबर 2022 को न्यायिक प्रशिक्षण और अनुसंधान संस्थान, उत्तर प्रदेश द्वारा आयोजित ''सेंसिटाईज़ेशन ऑफ़ डिस्ट्रिक्ट कोर्ट जजे़स ऑन जेंडर जस्टिस एंड डिफरेंटली एबल्ड विक्टिम्स/सरवाईवर्स ऑफ़ सेक्सुअल एब्यूज़'' पर एक दिवसीय संगोष्ठी, जे. पी. सभागार, आगरा में डॉ. सोना दीक्षित ने एक विशेषज्ञ के रूप में प्रतिभागिता प्रदान की।

विज्ञान संकाय:

छात्र उपलब्धि:

सुश्री गुंजन, पी.एच.डी. रसायन विज्ञान विभाग की शोधार्थी ने 17–18 अक्टूबर 2022 को हाइड्रो और अक्षय ऊर्जा विभाग, आई. आई. टी. रुड़की द्वारा आयोजित हाइड्रो और नवीकरणीय ऊर्जा नेट ज़ीरो कार्बन एनर्जी सिस्टम पर दो दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में पोस्टर प्रस्तुत किया। उन्हें पहला स्थान मिला, पोस्टर शीर्षक, "एफ्फीकेसी ऑफ वाटर हैसिन्थ एंड पेठा वेस्ट वाटर ऐज़ ए सस्टेनेबल बायो फ्यूल फीडस्टॉक" था।

स्कूल समाचार

डी.ई.आई प्रेम विद्यालय:
छात्राओं की उपलब्धियां:

दयालबाग़ चेतना विज्ञान पर 45वाँ राष्ट्रीय प्रणाली सम्मेलन और चौथे अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन के दौरान, जो 25–29 सितंबर, 2022 को आयोजित किया गया था, डी.ई.आई. प्रेम विद्यालय के छात्राओं ने विज्ञान, गृह विज्ञान और व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के प्रदर्शन प्रदर्शित किए। विज्ञानं क्षेत्र की छात्राओं ने अपने कामकाजी मॉडल प्रदर्शित किए जिनमें कुछ दिलचस्प विषय शामिल थे, जैसे 'स्वच्छ ऊर्जा के लिए पवन ऊर्जा कैसे उत्पन्न करें', 'चालक उनींदापन जांच प्रणाली', 'कोडिंग के माध्यम से सुपर इंटेलिजेंस छात्र उद्यमिता की ओर एक कदम', 'एग्रो इंटीग्रेटेड' – सेंसर डिवाइसेज़', 'सुपर इंटेलिजेंट मशीन बनाम सुपरमैन', आदि।

दसवीं कक्षा की छात्रा सुश्री मुक्ति साहनी ने चौथे अंतर्राष्ट्रीय दयालबाग़ चेतना विज्ञान में, 'जनजातीय चेतना: सामूहिक संबंध का एक पारंपरिक दृष्टिकोण' शीर्षक का शोधपत्र प्रस्तुत किया, जिसे सर्वश्रेष्ठ पत्रों में चुना गया।

स्वामी नगर मॉडल स्कूल, दिल्ली:
छात्राओं की उपलब्धियां:

एस एन एम एस छात्र ने राष्ट्रीय स्तर पर स्वच्छता और स्थिरता के दूत के रूप में मान्यता अर्जित की।
भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान आई. आई. टी., दिल्ली में 30 सितंबर और 1 अक्टूबर 2022 को द्विदिवसीय 'स्वच्छता सारथी समारोह' का आयोजन किया गया। इस आयोजन ने प्रधान वैज्ञानिक सलाहकार (पी एस ए), भारत सरकार के कार्यालय के अवशिष्ट से धन–मिशन के स्वच्छता सारथी फेलोशिप (एस एस एफ) के प्रथम वर्ष के पूरा होने को चिह्नित किया।

इस अवसर पर, 12वीं कक्षा के स्वामी नगर मॉडल स्कूल, दिल्ली के आर्य स्वरूप को 400 प्रतिभागियों में से 'ए' श्रेणी में प्रतिष्ठित एस एस एफ के पुरस्कार के लिए 18 अन्य लोगों के साथ चुना गया था। उन्हें भारतीय मुद्रा में रूपये 5,000/– की फेलोशिप राशि मिली।
मास्टर आर्य ने प्रदूषण मुक्त समुदायों के बारे में सामाजिक जागरूकता पैदा करने और आंशिक रूप से बायो–डिग्रेडेबल कचरे के

उपयोग के अपने नेक और निरंतर प्रयासों के कारण फ़ेलोशिप अर्जित की । उन्होंने कचरे से ''ब्रिकेट'' बनाए और अपने साथियों को भी ऐसा करने के लिए प्रोत्साहित किया, यह पहल उनके उत्साह और कार्य के प्रति प्रतिबद्धता का उदाहरण है। उन्होंने अपनी कॉलोनी में एक नाले को खोलने और संचालित करने में मदद की, जो अब तक कचरे के ढेर से ढका हुआ था।

आई. आई. टी. दिल्ली के कार्यक्रम में कई प्रतिष्ठित हस्तियों ने भाग लिया, जैसे– वैज्ञानिक सचिव, प्रधान वैज्ञानिक सलाहकार, भारत सरकार, डॉ. भगवान सिंह चौधरी, प्रोफेसर, कुरुकक्षेत्र विश्वविद्यालय, हरियाणा; श्री विजय कुमार, संचालन प्रमुख, वेलबीइंग आउट ऑफ वेस्ट कार्यक्रम, आई टी सी लिमिटेड; सुश्री मलयज वर्मानी, उपाध्यक्ष, इन्वेस्ट इंडिया; अन्य गणमान्य व्यक्तियों के मध्य द्विदिवसीय कार्यक्रम के अंतर्गत, मास्टर आर्य और अन्य साथियों ने पिछले एक साल में किए गए अपने कार्य को पोस्टर/प्रोटोटाइप/प्रस्तुतिकरण/उत्पादों के रूप में इवेंट/ प्रदर्शनी में प्रदर्शित किया। प्रदर्शनी के अतिरिक्त छात्रों के लिए फोल्डस्कोप माइक्रोस्कोपी कार्यशाला सहित विभिन्न सत्रों और कार्यशालाओं का भी आयोजन किया गया।

रक्षा बलों में महिलाओं के प्रवेश के लिए प्रशिक्षण

महिला सशक्तिकरण को सुदृढ़ करने के एक कदम के रूप में, डी.ई.आई. के आई.सी.टी. Continuing Education केंद्र ने रक्षाबल में महिलाओं के प्रवेश के लिए एक प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू किया है। एन डी ए, सी डी एस और ए एफ सी एटी के लिए लिखित परीक्षा की तैयारी चल रही है और लिखित परीक्षा में उत्तीर्ण छात्रों को सेना और नागरिक पेशेवरों के एक चुनिंदा समूह द्वारा पांच दिवसीय एस एस बी स्क्रीनिंग प्रक्रिया के लिए तैयार किया जा रहा है। प्रशिक्षण के क्षेत्रों में मनोवैज्ञानिक परीक्षण, मौखिक और गैर–मौखिक तर्क, सामान्य ज्ञान, शारीरिक प्रशिक्षण, समूह कार्य, जी डी, व्याख्यान और साक्षात्कार आदि शामिल हैं।

खण्ड 'ख' : डी.ई.आई. ऑनलाइन और दूरस्थ शिक्षा

कोऑर्डिनेटर की डेस्क से

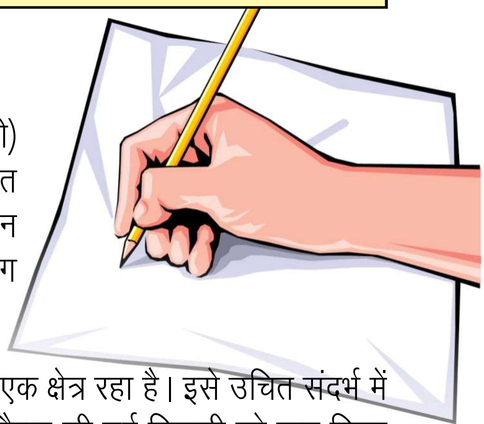

हमने 1 दिसंबर, 2009 को अपने पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा इन थियोलॉजी (पी जी डी टी) कार्यक्रम के अनुमोदन के लिए तत्कालीन दूरस्थ शिक्षा परिषद (इग्नू) को एक प्रस्ताव प्रस्तुत किया, जिसके लिए हमें सांविधिक निकाय को कार्यक्रम के बारे में बहुत सारी जानकारी प्रदान करनी थी (जो 25 जुलाई , 2011 को अनुमोदित किया गया था)। हम प्रस्ताव के प्रारंभिक भाग (Introduction) से तीन अंश नीचे प्रस्तुत कर रहे हैं:

(I) "धर्मशास्त्र धर्म का वैज्ञानिक अध्ययन है और दयालबाग़ में अध्ययन और शोध का एक क्षेत्र रहा है। इसे उचित संदर्भ में रखने के लिए, महर्षि योगी शुद्धानंद भारती की 1953 में दयालबाग़ की यात्रा के दौरान की गई टिप्पणी को याद किया जा सकता है– *"दयालबाग़ ने मानवता को एक नया मार्ग दिखाया है, जिस तक कोई भी आध्यात्मिक गुरु अब तक पहुँच नहीं सका है। जिस तरह से आप अपने श्रम और अपने प्रयास को सेवा और प्रार्थना के साथ संतुलित करते हैं, वही एकमात्र तरीका है जिससे भारत की आत्मा जो कई गुना बंधनों में जकड़ी हुई है, मुक्ति पा सकती है। दयालबाग़ इस पद्धति को विकसित करके देश को इस दिशा में ले जा रहा है और इससे भारत के शरीर और आत्मा को स्वस्थ बना सकता है।*

(ii) 2004–2005 से डी.ई.आई. द्वारा धर्मशास्त्र में दो सेमेस्टर एडवांस्ड पोस्ट–ग्रेजुएट डिप्लोमा की शुरूआत की गई है।

(iii) धर्मशास्त्र में दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम 7 अगस्त, 2006 को न्यूयॉर्क और शिकागो के दूरस्थ शिक्षा केंद्रों में क्रमशः नौ और पांच छात्रों के नामांकन के साथ शुरू हुआ। वर्तमान (2009) में, कार्यक्रम बारह छात्रों की कुल बैच संख्या के साथ शिकागो, सैन फ्रांसिस्को और टोरंटो के केंद्रों पर चल रहा है। डी.ई.आई. अकादमिक इनपुट प्रदान करता है, शोध प्रबंध कार्य के लिए दूरस्थ पर्यवेक्षण, और पाठ्यक्रम पर प्रशासनिक नियंत्रण रखता है। दूरस्थ शिक्षा केंद्रों पर, पाठ्यक्रम डी.ई. आई. द्वारा नियुक्त सलाहकारों की देखरेख में चलाया जाता है।

वर्ष 2018 तक, हमने कुल 24 दूरस्थ शिक्षा केंद्रों में पी जी डी टी कार्यक्रम शुरू किया था और अब तक इनमें से पी जी डी टी के 800 से अधिक धारक निकल चुके हैं (वर्ष 2013 में अधिकतम संख्या 121 थी), जो विश्व भर में 'बेहतर सांसारिकता', का संदेश फैला रहे हैं।

(प्रो. वी.बी. गुप्ता)

दूरियों को कम करना (Bridging the Gaps)

डी एस सी–2022 और एन एस सी–2022 के संयुक्त सम्मेलन के दौरान, 4 दिनों (26–29 सितंबर, 2022) में फैले, उनके एक बहुत व्यापक परिदृश्य में कई प्रस्तुतियाँ दी गईं जो उनके मुद्दों (themes) से जुड़ी हुई थी जो इस प्रकार थे : दयालबाग़ सांइस ऑफ कॉन्शसनेस के लिए: पूर्वी और पश्चिमी दृष्टिकोण के बीच की दूरियों को कम करना (Bridging the Gaps) और नेशनल सिस्टम्स कॉन्फ्रेंस 2022 के मामले में 'ग्लोबल सस्टेनेबिलिटी – थ्रू लैक्टो–वेजिटेरियन एग्रो–इकोलॉजी सिस्टम'। इस लेख में, हम केवल डी एस सी–2022 कार्यवाही पर विचार करेंगे।

यह स्मरण करना दिलचस्प है कि अप्रैल 2016 में टूसॉन (Tucson), एरिज़ोना (यू.एस.ए.) में आयोजित चेतना – पूर्वी और पश्चिमी परिप्रेक्ष्य के एकीकरण पर एक पूर्व अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में, एम्स (AIIMS), नई दिल्ली के डॉ. ए के मुखोपाध्याय ने चेतना के लिए पूर्वी और पश्चिमी दृष्टिकोण पर विस्तार से विचार किया था। { संदर्भः चेतना – पूर्वी और पश्चिमी परिप्रेक्ष्य का एकीकरण, एमेरिटस संपादक श्रद्धेय प्रो. प्रेम सरन सतसंगी और प्रो. स्टुअर्ट हैमरॉफ, New Age Books, नई दिल्ली, 2016; (पृष्ठ संख्या 437 से 468) } और इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि इस दृष्टिकोण में सामंजस्य स्थापित किया जाएगा जो चेतना के एक बहु वांछित विज्ञान के विकास को निर्धारित करेगा और ऐसे व्यक्तियों के उद्भव की सुविधा प्रदान करेगा जिनके पास पूर्ण ज्ञान और कौशल है और जो केवल सेवा और सेवा के प्रति समर्पित हैं। लेखक इन व्यक्तियों को होमो स्पिरिचुअलिस कहते हैं और कहते हैं 'हुज़ूर डॉ. प्रेम सरन सतसंगी साहब दयालबाग़ में ऐसे लीडर का एक जीवंत उदाहरण हैं......' वे राधास्वामी सतसंग सभा, दयालबाग़ मुख्यालय, जो पिछले 107 वर्षों से अस्तित्व में है, के सदस्य के रूप में अपनी क्षमता से सेवा कर रहे हैं। शिक्षा सलाहकार समिति एक गैर–सांविधिक निकाय, जो सभी हितधारकों के बीच सहमति–निर्माण दृष्टिकोण द्वारा एक थिंक–टैंक के रूप में कार्यरत है, के पिछले करीब 19 साल से अध्यक्ष पद पर कार्यरत हैं।

इस पृष्ठभूमि में, श्रद्धेय प्रो. पी.एस. सतसंगी साहब की कई वर्ष पूर्व चेतना पर एक सम्मेलन में की गई टिप्पणियों का सारांश, जिसे क्वांटम यांत्रिकी, तंत्रिका विज्ञान, आदि के विशेषज्ञों द्वारा संबोधित किया गया था, उल्लेखनीय हैं। उन्होंने कहा:

> *"शोधकर्ताओं द्वारा किए जा रहे अच्छे काम के परिणामों को इस क्षेत्र के अनुभवों के साथ एकीकृत करने की आवश्यकता है, जो रहस्य को खोलने के लिए उच्चतम क्रम की सहज चेतना रखने वाले एडेप्ट्स (सिद्वघ्स्त) द्वारा प्रकट किए गए हैं।"*

इस तरह के एकीकरण के लिए एक पूर्वापेक्षा यह है कि आपसी समझ और एक दूसरे के दृष्टिकोण के लिए सम्मान होना चाहिए।

इस संदर्भ में कील विश्वविद्यालय, जर्मनी की प्रो. एन्ना एम. होराशेक, डी एस सी–2022 की अध्यक्ष (पश्चिम) द्वारा अपने स्वागत भाषण में निम्नलिखित बिंदु उल्लेखनीय हैं। उन्होंने कहा:

> *"......आध्यात्मिक पूर्व और धर्मनिरपेक्ष पश्चिम की प्रचलित – और अक्सर पोषित – रूढ़िवादिता, अब और नहीं है, जैसा कि पूज्य प्रोफेसर सतसंगी साहब ने कल बताया था। यह पूर्व में वैज्ञानिकता के पश्चिमी मानकों के प्रसार, योग और ध्यान के साथ पश्चिम के 'आध्यात्मीकरण' और पूर्व और पश्चिम में धर्म के वैज्ञानिकीकरण से नष्ट हो गया है। हालाँकि, पूर्व और पश्चिम में चेतना शब्द के अर्थ को ऋषियों, दार्शनिकों और धर्मशास्त्रियों द्वारा सौंपे गए विभिन्न दार्शनिक और धार्मिक परंपराओं द्वारा आकार दिया गया है। इस प्रकार, पश्चिमी संस्कृतियों में, 'चेतना' को ज्यादातर व्यक्तिगत मानव विषय की एक आंतरिक, परिभाषित*

विशेषता के रूप में समझा जाता है, जबकि विभिन्न भारतीय दर्शनों में; 'चेतना' एक पारलौकिक, आध्यात्मिक, दैवीय उपस्थिति को दर्शाता है .....तद्नुसार, चेतना के अध्ययन के तरीके गहराई की दृष्टि से भिन्न होते हैं।''

चेतना के विषय ने दार्शनिकों, मनोवैज्ञानिकों, तंत्रिका विज्ञानियों, भौतिकविदों, खगोल भौतिकीविदों, गणितज्ञों, मस्तिष्क विशेषज्ञों आदि सहित कई विषयों का ध्यान आकर्षित किया है।

सम्मेलन में पूर्व और पश्चिम दोनों ओर से हार्ड कोर (hard core) वैज्ञानिक प्रस्तुतियाँ थीं, हालांकि, यह एक आशाप्रद संयोग है कि पूर्वी अनुभवात्मक ज्ञान पश्चिमी विद्वानों का अधिक ध्यान आकर्षित कर रहा है। डी एस सी–2022 में, माउंट सैन एंटोनियो कॉलेज, यू.एस.ए. में दर्शनशास्त्र के प्रोफेसर डॉ. डेविड क्रिस्टोफ़र लेन ने 'शब्द योग' के बारे में बात की, जो निरंतर जागृति की एक कैस्केडिंग श्रृंखला द्वारा चेतना की मचान प्रकृति में गहरी अंतर्दृष्टि प्रदान करता है, जो विभिन्न स्तरों की ओर इशारा करता है। जो परम श्रद्धेय प्रो. पी एस सतसंगी साहब द्वारा प्रस्तावित चेतना के रूप में विकिपीडिया द्वारा प्रलेखित है। प्रो. डेविड लेन की नवीनतम पुस्तक द साउंड करंट ट्रेडिशनः ए हिस्टोरिकल ओवरव्यू पर केम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस द्वारा प्रकाशित की जा रही है। डॉ डेविड लेन की पत्नी, डॉ एंड्रिया – डियम लेन, दर्शनशास्त्र की प्रोफेसर और विभाग की अध्यक्ष एक योग उत्साही (enthusiast) हैं और उन्होंने एक प्रस्तुति दी कि कैसे आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस ध्यान प्रथाओं और गहन सीखने (deep learning) में मदद कर सकता है और वह इस बयान के साथ समाप्त होती है ''....... इस वजह से, अगले कुछ दशकों में राधास्वामी मत की शिक्षाओं को जिस तरह से प्रसारित किया जाएगा, उसका बहुत विस्तार और विकास होगा।"

डॉ. डेविड लेन द्वारा संदर्भित चेतना के लिए आंतरिक जागृति द्वारा किए गए योगदान को डॉ. पीटर रसेल के जीवन द्वारा खूबसूरती से चित्रित किया गया है, जिन्होंने इंग्लैंड में केम्ब्रिज विश्वविद्यालय में गणित, भौतिकी और प्रयोगात्मक मनोविज्ञान का अध्ययन किया और ब्रिस्टल से ध्यान विधि (meditation) पर पी एच डी की। उन्होंने अपनी पुस्तक 'फ्रॉम साइंस टू गॉड' (भारत में योगी इंप्रेशन, मुंबई द्वारा दिसंबर 2003 में प्रकाशित) में चेतना और ईश्वर पर कुछ दिलचस्प अवलोकन किए हैं। उदाहरण के लिए, 'महान जागृति' (Great Awakening) नामक पुस्तक का अंतिम अध्याय इस प्रकार शुरू होता हैः ''जितना अधिक मैंने चेतना की प्रकृति का अध्ययन किया है, उतना ही मैं आधुनिक दुनिया में आंतरिक जागरण की महत्वपूर्ण भूमिका की सराहना करता हूँ – यह दुनिया, जो अपने सभी तकनीकी कौशल के बावजूद, गहरे और अधिक गहरे संकट में पड़ती दिख रही है।''

अध्याय के अंत में, वे एक ईमानदार स्वीकारोक्ति करते हैंः

> ''खगोलविदों ने गहरे अंतरिक्ष में देखा है......, ब्रह्मांड विज्ञानियों ने गहरे समय के सन्दर्भ में पीछे देखा है और भौतिकविदों ने पदार्थ की गहरी संरचना के रूप में देखा है...... । प्रत्येक मामले में उन्हें न तो ईश्वर का प्रमाण मिला है, न ही ईश्वर की कोई आवश्यकता महसूस हुई है। दैवीय सहायता के बिना ब्रह्मांड पूरी और अच्छी तरह से काम करता प्रतीत होता है।''

वे आगे चलकर कहते हैंः

> ''तीस साल पहले मैंने इस तरह के तर्क को स्वीकार किया था। आज, मुझे भगवान की इस धारणा का एहसास हुआ जिसे विज्ञान और मैंने अस्वीकार कर दिया था, वह अनाड़ी और पुराने जमाने का था। जब हम महान संतों और ऋषियों के लेखन पर विचार करते हैं, तो हमें अंतरिक्ष, समय और पदार्थ के दायरे में ईश्वर के होने के अधिक दावे नहीं मिलते हैं। जब वे यानि संत और ऋषि भगवान की बात करते हैं, तो वे आमतौर पर एक गहन व्यक्तिगत अनुभव की बात कर रहे होते हैं। अगर हम ईश्वर को पाना चाहते हैं, तो हमें अपने भीतर, दिमाग को गहराई से देखना होगा – एक ऐसा क्षेत्र जिसे पश्चिमी विज्ञान ने अभी तक खोजा नहीं है।''
>
> ''मेरा मानना है कि जब हम अंतरिक्ष, समय और पदार्थ की प्रकृति से मन की प्रकृति में पूरी तरह से उतरते हैं, तो हम चेतना को विज्ञान और आत्मा के बीच लंबे समय से प्रतीक्षित पुल के रूप में पाएंगे।''

उल्लेखनीय है कि डॉ. पीटर रसेल के ऊपर लिखे हुए विचार वर्ष 2003 में प्रकाशित हुए जबकि इसके 68 वर्ष पहले वर्ष 1935 में परम गुरू साहबजी महाराज सर आनंद स्वरूप ने आगरा विश्वविद्यालय के छात्रों को इस प्रकार संबोधित किया था ''.......आप इस पर निर्भर हो सकते हैं कि वह सत्य जिसे हम सभी बहुत प्यार करते हैं विज्ञान के भौतिक उपकरणों से कभी नहीं समझा जा सकता है, न ही परम वास्तविकता जिसे हम बहुत प्यार करते हैं, दर्शन के मानसिक प्रयास से महसूस की जा सकती है। प्रोविडेंस ने मानव शरीर के भीतर एक विशेष आध्यात्मिक शक्ति को स्थित किया है, और यह धर्म का अनन्य कार्य है जो मनुष्य को उस शक्ति के बारे में सब कुछ सिखाता है........''

– प्रो. वी.बी. गुप्ता द्वारा संकलित
समन्वयक, डी.ई.आई. दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम

खण्ड 'ग' : डी.ई.आई के पूर्व छात्र (AADEIs & AAFDEI)

संपादक की डेस्क से

डी.ई.आई. मासिक समाचार के द्वितीय अंक को उसके नए अवतार में प्रकाशित करते समय हम फिर से अपने छोटे–छोटे प्रयासों में कुल मालिक का मार्गदर्शन पाकर दीनता से झुक जाते हैं। हवा में शीतलता, और सर्दियों की घोषणा करते हुए, हमें अप्रत्याशित जलवायु परिवर्तन और व्यवधानों के लिए तैयार करती है। इस अक्टूबर में, उत्तर भारत में अप्रत्याशित बारिश ने खेती के कार्यक्रम को बिगाड़ दिया और कई क्षेत्रों में तबाही मचा दी। उपरोक्त के संज्ञान में हम संत सुपरमैन योजना के अंतरगत तीव्र नन्हें मुन्ने सुपरमैन पर एक रचनात्मक कविता; मागदर्शन पर एक संक्षिप्त टिप्पणी, एक गतिविधि जो डी.ई.आई. के पूर्व छात्र (AADEIs) की पहल हैं; कुछ पूर्व छात्रों के बाइट्स और दयालबाग़ पर बदलते दृष्टिकोण पर एक लेख प्रस्तुत करते हैं। आपकी टिप्पणी ही भागीदारी है; आपका योगदान, प्रकाशन के योग्य है इसलिए हमारे अगले अंक में शामिल करने के लिए 30 नवम्बर, 2022 से पहले हमें न्यूज़लैटर aadeis@gmail.com या premksri@gmail.com द्वारा जरूर लिखें।

हम बातचीत का वादा करते हैं!

ईश्वर के पितृत्व और मनुष्य के भाईचारे की मशाल

प्रिया सिंह

एम बी एम (1993), **धर्मशास्त्र में स्नातकोत्तर डिप्लोमा** (2012)
वर्तमान में, केंद्र प्रभारी, डी.ई.आई. चेन्नई सूचना केंद्र

पार्थिव धरातल पर, जन्म एक बहुत ही अनोखी जाति है, संत सुपरमैन वे हैं;

उसकी प्रचुर कृपा के साथ धन्य।

ये दिव्य छोटी आत्माएं जीवंत, प्रबुद्ध और उत्साही हैं,

वे हमेशा ऊर्जावान और गतिशील रहते हैं, वे कभी भी स्थिर नहीं होते हैं।

सुबह हो या शाम, ये सुपरमैन हमेशा कार्रवाई के लिए तैयार रहते हैं,

खेतों में भाग लेने के लिए, पी टी और उनके मुख्य आकर्षण मार्च पास्ट।

मानवता की सेवा करने के लिए प्रशिक्षित होना और नली सेकेंडस बनना उनका लक्ष्य है,

शांति, सद्भाव, करुणा के अग्रदूत, ये धन्य आत्माएं हैं।

अपने प्यारे परमपिता की प्यारी नजर पाने के लिए,

खेतों में नन्हे–मुन्नों को इकट्ठा करने की प्रेरक शक्ति है।

पूरी तरह चार्ज बैटॅरियों की तरह, वे रा–धा–स्वा–आह–मी का जाप करते हैं,

भिनभिनाती मधुमक्खी की तरह खेतों में झूमते और फड़फड़ाते हैं।

परमपिता के चुने हुए वे निश्चित रूप से हैं, एक मिशन के लिए जो समय पर पूरा होने के लिए बहुत दूर नहीं।

जब यह दुनिया अत्यधिक अराजकता और संघर्ष में होगी,

जब मानव जीवन में निराश और व्याकुल महसूस करेगा, विश्व शांति फैलाने के लिए ये सुपरमैन योजना बनाएंगे,

ईश्वर के पितृत्व और मनुष्य के भाईचारे की स्थापना करके विश्व शांति फैलाएंगे।

मार्गदर्शन

पल्लवी सतसंगी शर्मा
एम बी एम (1996)

वर्तमान में, निदेशक एच आर ग्लोबल शेयर्ड सर्विसेज एंड एच आर ऑपरेशंस दक्षिण पूर्व एशिया, एन एक्स पी सेमीकंडक्टर्स

मैंने कॉरपोरेट्स में काम करने का 25 वर्ष का पेशेवर अनुभव पूरा कर लिया है और जब मैं पीछे मुड़कर देखती हूँ, तो मैं अपने सभी मेंटर्स का पर्याप्त रूप से पूर्णतया आभार प्रदर्शन नहीं कर सकी जिन्होंने मेरी पूरी पेशेवर यात्रा में मेरी मदद की और मुझे वह बनने में मदद की। जो मैं आज हूँ!

वे कहते हैं, संरक्षक चुनने के लिए एक दिमाग है, सुनने के लिए एक कान और वह सही दिशा पर ले जाने के लिए है। वास्तव में, जैसा कि मुझे लगता है कि हम सभी जिन्होंने अपने जीवन में कुछ हासिल किया है, वे भाग्यशाली रहे हैं कि उन्हें किसी न किसी रूप में औपचारिक या अनौपचारिक रूप से सलाह दी गई है। मैं वास्तव में सोचती हूँ कि हम सभी को समय निकालना चाहिए और ऐसे लोगों तक पहुंचने के लिए सचेत प्रयास करने चाहिए।

मेरी पहली नौकरी में, मैं बहुत भाग्यशाली थी कि मुझे डी.ई.आई. के मेरे कुछ वरिष्ठ और श्री वी प्रेम स्वरूप या 'वी पी एस', मेरे गुरु, जिन्होंने मुझे मानव संसाधन (एच आर) क्षेत्र में रुचि लेने के लिए प्रेरित किया। कॉर्पोरेट वातावरण में कदम रखने से पहले, मैंने हमेशा वित्त (finance) में अपना करियर बनाने के बारे में सोचा था। मैं श्री वी. प्रेम स्वरूप को मानव संसाधन क्षेत्र में इतनी दिलचस्पी लेने के लिए बहुत बड़ा श्रेय देती हूँ कि मैंने अपनी पसंद के क्षेत्र में बदलाव किया। बाद में एक्स एल आर आई जमशेदपुर से स्पेशलाइज़ेशन कोर्स के साथ, मैंने खुद को एच आर पेशे में पूरी तरह से डुबो दिया। यह मेंटरशिप का एक बेहतरीन उदाहरण हैं और कॉर्पोरेट नवागतों के लिए यह चमत्कार कर सकता है!

हम बहुत खुश हैं कि AADEIs के चैप्टर संगठन के भीतर, परिभाषित उद्देश्यों में से एक मेंटरशिप है जिसमें हम हाल ही में स्नातक किए गए डी.ई.आई. छात्रों को उनके रोजगार के पहले वर्ष में सलाह देते हैं। दिल्ली एन सी आर और चंडीगढ़ चैप्टर एक पायलट के संचालन की प्रक्रिया में हैं, और अब तक, मेंटर्स से बहुत ही उत्पादक और सकारात्मक प्रतिक्रिया मिल रही है। योजना इस पायलट के बाद सभी चैप्टर में मेंटरिंग शुरू करने और रुचि रखने वाले AADEIs चैप्टर के सदस्यों को शामिल करने की है, जो इस कार्यक्रम के माध्यम से अल्मा मेटर और सामान्य रूप से समाज को वापस देने और योगदान करने का अवसर लेना चाहते हैं!

मैं सभी पूर्व छात्रों को इस पहल के बारे में अधिक जानने और इसे सफल बनाने में हाथ मिलाने के लिए आपके अध्याय प्रमुखों तक पहुंचने के लिए आमंत्रित करती हूँ!

पूर्व छात्र (Alumni) बाइट्स....

"दयालबाग़ में शिक्षा का सबसे बड़ा लाभ है..."

".....श्रम की गरिमा और एक मजबूत कार्य नीति। किसी के चरित्र के सभी आयामों को विकसित करने पर जोर दीर्घकालिक मूल्य प्रणालियों के निर्माण में एक लंबा रास्ता तय करता है, जो मेरे पूरे करियर में मेरे साथ रहे हैं।"

– अविनाश सिंह, बी ई इलेक्ट्रिकल (1987)
वर्तमान में, अध्यक्ष, 22nd सेंचुरी सॉल्यूशंस, और संस्थापक, Destar India

''... इसकी अनूठी बहु–विषयक मूल्य प्रणाली जो विनम्रता का संचार करती है और किसी की पेशेवर और व्यक्तिगत जिम्मेदारियों को दूर करते हुए एक लंबा रास्ता तय करती है। कॉर्पोरेट जगत में विविधता, समानता और समावेश के बारे में पढ़ाए जाने वाले पाठ, अभिनव और जिज्ञासु होते हुए भी, किसी ऐसे व्यक्ति के लिए आश्चर्य के रूप में नहीं आते हैं जिसने डी.ई.आई. शैक्षिक प्रणाली का अनुभव किया है।''

– इंदु श्रीवास्तव, धर्मशास्त्र में पी जी डिप्लोमा (2007)

वर्तमान में, निदेशक, ऑन्कोलॉजी ग्लोबल रेगुलेटरी अफेयर्स, मर्क, यूए.स.ए.

दयालबाग : बदलते नज़रिये

अपार मदन
सदस्य, AAFDEI
वर्तमान में, सॉफ्टवेयर इंजीनियर III, गूगल, माउंटेन व्यू, कैलिफोर्निया

मुझे सतसंग से जुड़कर अत्यंत सौभाग्य प्राप्त हुआ है, जिसके लिये मेरी माँ का धन्यवाद। एक बच्चे के रूप में, दयालबाग़ की मेरी यात्रा छोटी और विरल थी। हालांकि, प्रत्येक यात्रा ने एक से अधिक तरीकों से एक अमिट छाप छोड़ी। जैसे–जैसे मैं बड़ा हुआ, मैंने दयालबाग़ को एकमात्र पाया, जहाँ हर एक व्यक्ति – युवा या वृद्ध, कड़ी मेहनत के साथ एवं नम्रता से अपने कर्तव्यों का निर्वहन करते हैं। एक अत्यंत आस्थिर दुनिया में, एक संपूर्ण समुदाय को जो अपने लक्ष्य को अच्छी तरह जानते थे, का देखना उल्लेखनीय था – वे यह भी जानते थे कि वास्तव में वे क्या हैं, वे क्या कर रहे थे, और वे हर दिन अथक परिश्रम करते थे। मैं अपनी उम्र के बच्चों को दयालबाग़ के शांत कृषि क्षेत्रों में हाथ में 'खुरपी' लिए सुबह–सुबह घूमते देखता था। जैसा कि आपने अनुमान लगाया होगा, यह दिल्ली में मेरे दोस्तों की गतिविधियों से बिल्कुल विपरीत था। दयालबाग़ के बारे में निश्चित रूप से कुछ रहस्य था – चारों ओर शांति, शांति और संतोष।

यह केवल उन वर्षों के दौरान है कि मैंने इस खूबसूरत सिम्फोनिक ऑर्केस्ट्रा के निर्देशक हुज़ूर राधास्वामी दयाल की आभा के बारे में और अधिक सीखना शुरू किया। यह उनके प्रेम, दया और दर्शन की गहरी तड़प है, जो दयालबाग़ में सभी के लिए एक प्रेरक शक्ति के रूप में कार्य करती है। प्रभु के लिए सच्चा प्रेम सभी सांसारिक सुखों और कष्टों से परे है।

एक दशक के दौरान, उनकी दया से मुझ पर सतसंग के आदर्श और दयालबाग़ जीवन का उदय हुआ। और यद्यपि मेरा भोला–भाला हृदय दयालबाग़ और उसके आसपास रहना चाहता था, किन्तु आज मैं यह लेख यू.एस.ए. से लिख रहा हूँ।

मुझे अब पता चला है कि दयालबाग़ सिर्फ एक भू–स्थान नहीं है, बल्कि हमारे लिए हमारे प्रत्येक स्थानीय सतसंग समुदाय में दोहराने के लिए एक मॉडल है, और अंततः इसे दुनिया में ले जाना है। शुक्र है कि अब हमारे पास दैनिक प्रार्थना और क्षेत्र के काम में दयालबाग़ से आभासी पुण्य वास्तविकता मोड में उनके प्रतिष्ठित संसर्ग का आशीर्वाद है।

हम सभी को ''ईश्वर के पितृत्व, और मानव के भातृत्व'' के आदर्श से जीने की शक्ति मिले और दयालबाग़ मॉडल को दुनिया के सामने ले जा सकें।

प्रकाशन समितियाँ / सम्पादक मंडल

डी.ई.आई.

संरक्षक
प्रो. पी.के. कालरा

मुख्य संपादक
प्रो. जे.के. वर्मा

संपादकीय मंडल
डॉ. सोना दीक्षित
डॉ. सोनल सिंह
डॉ. अक्षय कुमार सत्संगी
डॉ. बानी दयाल धीर

सदस्य
डॉ. चारु स्वामी
डॉ. नेहा जैन
डॉ. सौम्या सिन्हा
श्री आर.आर. सिंह
प्रो. प्रवीण सक्सेना
प्रो. वी. स्वामी दास
डॉ. रोहित राजवंशी
डॉ. भावना जौहरी

सलाहकार
प्रो. एस.के. चौहान

अनुवादक
डॉ. नमस्या
डॉ. निशीथ गौड़

डी.ई.आई. ऑनलाइन और दूरस्थ शिक्षा

संरक्षक
प्रो. पी.के. कालरा
प्रो. वी.बी. गुप्ता

संपादकीय सलाहकार
प्रो. एस.के. चौहान
प्रो. जे.के. वर्मा

संपादक मंडल
डॉ. सोनल सिंह
डॉ. मीना पायदा
डॉ. लॉलीन मल्होत्रा,
डॉ. बानी दयाल धीर
श्री राकेश मेहता

अनुवादक
डॉ. स्वामी प्यारी कौड़ा

डी.ई.आई. **Alumni (AADEIs & AAFDEI)**

संपादक
प्रो. प्रेम कुमारी श्रीवास्तव

संपादक मंडल
डॉ. सरन कुमार सतसंगी,
प्रो. साहब दास
डॉ. बानी दयाल धीर
श्रीमती शिफाली सत्संगी
श्रीमती अरुणा शर्मा
डॉ. स्वामी प्यारी कौड़ा
डॉ. गुरप्यारी भटनागर
डॉ. वसंत वुप्पुलुरी

अनुवादक
डॉ. स्वामी प्यारी कौड़ा

पंजीकृत कार्यालयः
108, साउथ एक्स प्लाजा –1,
साउथ एक्सटेंशन पार्ट II,
नई दिल्ली–110049।

प्रशासनिक कार्यालयः
पहली मंजिल, 63,
नेहरू नगर,
आगरा –282002

चित्रण, मुद्रण एवं ई–प्रकाशनः दयालबाग़ प्रेस